इक्कीस

मसीही परिवार

The Christian Family

परमेश्वर ही है जो परिवार के विचार को लेकर आया। इसी कारण वह इस बारे में अन्तर्दृष्टि दे सकता है कि एक परिवार को कैसे कार्य करना चाहिए और इसी के साथ-साथ वह हमें उन फन्दों से भी सावधान कर सकता है जो परिवारों का नाश करते हैं। परमेश्वर ने अपने वचन में निश्चय ही हमें परिवार की रचना और भूमिका के संबन्ध में ऐसे कई सिद्धान्त दिये हैं जिन पर प्रत्येक सदस्य को कार्य करना चाहिए। बाइबल के इन निर्देशों का पालन किये जाने पर परिवार उन आशीषों का अनुभव करेंगे जो परमेश्वर ने उन्हें आनन्द देने के लिए रखी हैं। उनका उल्लंघन किये जाने पर परिणाम बरबादी और हृदयाघात के रूप में होता है।

पति और पत्नी की भूमिका

The Role of Husband and Wife

परमेश्वर ने एक निश्चित रूप में परिवार की रचना की है। चूंकि परमेश्वर द्वारा तैयार की गई यह बनावट परिवार को स्थिरता प्रदान करती है, शैतान परमेश्वर की इस बनावट को तोड़ने का भरसक प्रयास करता है।

सर्वप्रथम, परमेश्वर ने ठहराया कि पति पारिवारिक इकाई का प्रमुख हो। यह पति को अपनी पत्नी तथा बच्चों पर निरकुंश रूप से शासन करने का अधिकार नहीं देता। परमेश्वर ने पतियों को एक प्रमुख के रूप में अपने अपने परिवारों से प्रेम करने, उनकी सुरक्षा करने, ज़रूरतों को पूरा करने तथा उनकी अगुवाई करने को बुलाया है। परमेश्वर यह भी चाहता है कि पत्नियां अपने पतियों की अगुवाई के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हों। पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट हो जाता है:

हे पत्नियों, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के।

> क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें (इफि. 5:22-24)।

पति अपनी पत्नी का *आत्मिक* प्रमुख नहीं होता है—केवल यीशु ही इस भूमिका को पूरा करता है। यीशु कलीसिया का आत्मिक प्रमुख है और एक मसीही पत्नी उतनी ही कलीसिया की एक सदस्य है जितना कि उसका पति है। तौभी, मसीही परिवार में, मसीही पति अपनी पत्नी और बच्चों का प्रमुख या सिर होता है, और उन्हें उसके परमेश्वर प्रदत्त अधिकार के प्रति समर्पण करना चाहिए।

कितनी मात्रा तक एक पत्नी को अपने पति के प्रति समर्पण करना चाहिए? जैसा पौलुस ने कहा, उसे हर *बात* में अपने पति के प्रति समर्पण करना चाहिए। इस भूमिका के प्रति समर्पण करने की मनाही केवल उसी दशा में होगी जब उसका पति उससे परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करने को कहे या फिर उसके विवेक को चोट पहुंचाने वाला कोई कार्य करो। बेशक, कोई भी मसीही अपनी पत्नी से परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करने को नहीं कहेगा और न ही उसके विवेक को चोट पहुंचाएगा। पति अपनी पत्नी का प्रभु नहीं है—उसके जीवन में वह स्थान केवल यीशु का ही है। यदि उसे यह चुनाव करना पड़े कि उसे किसका आज्ञापालन करना चाहिए तो ऐसी दशा में उसे निश्चय ही यीशु का चुनाव करना चाहिए।

पतियों को स्मरण रखना चाहिए कि ज़रूरी नहीं कि परमेश्वर हमेशा ''पतियों की ओर'' ही हो। परमेश्वर ने एक बार इब्राहीम को वह करने को कहा जो उसकी पत्नी सारा ने उससे कहा था (देखें उत्प. 21:10-12)। पवित्रशास्त्र यह भी बताता है कि अबीगैल ने अपने मूर्ख पति नाबाल की आज्ञा का उल्लंघन किया और एक महाविपत्ति से बचाया (देखें 1 शमू. 25:2-38)।

पतियों के लिये परमेश्वर का वचन

God's Word to Husbands

पतियों को, परमेश्वर कहता है,

> हे पतियो अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया...इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन् उसका पालन पोषण करता है जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं...पर

> तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने। (इफि 5:25, 28-30, 33)।
>
> पतियों को अपनी पत्नियों से उसी तरह से प्रेम करने की आज्ञा दी गई है जैसे मसीह कलीसिया से प्रेम करता है। यह कोई छोटा उत्तरदायित्व नहीं है! कोई भी पत्नी खुशी से ऐसे व्यक्ति के प्रति समर्पित होगी जो उससे मसीह के समान प्रेम करता है-जिसने कि त्यागपूर्ण प्रेम में अपने जीवन को भी दे दिया। जिस तरह से मसीह अपनी देह कलीसिया, से प्रेम करता है, उसी तरह पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए जिसके साथ वह ''एक देह'' हो जाता है। (इफि. 5:31)।

यदि एक मसीही पति अपनी पत्नी से उतना प्रेम करता है जितना उसे करना चाहिए, तो वह उसकी ज़रूरतों को पूरा करेगा, उसकी चिन्ता करेगा, उसका आदर करेगा, उसकी सहायता करेगा, उसे प्रोत्साहित करेगा और उसके साथ समय बिताएगा। यदि वह अपनी पत्नी से प्रेम करने के उत्तरदायित्व में असफल हो जाता है, तो पति के लिए उसकी प्रार्थनाओं के रुक जाने का खतरा है :

> वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर *उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं* (1 पत. 3:7, पर बल दिया गया है)।

निश्चय ही कोई भी ऐसा विवाह नहीं होगा जिसमें कोई भी असहमति या संघर्ष न हो। तथापि, हमारे जीवनों में हम आत्मा के फलों के विकास और वचनबद्धता के कारण पति और पत्नी के रूप में मेल से रहना सीखने के साथ साथ मसीही विवाह में हमेशा बढ़ती रहने वाली आशीषों को अनुभव भी कर सकते हैं। सभी विवाहों में उत्पन्न होने वाली आवश्यक समस्याओं के द्वारा; प्रत्येक सहभागी मसीह के समान परिपक्वता में बढ़ना सीख सकता है।

पतियों और पत्नियों के कर्तव्यों के संबन्ध में अधिक जानकारी के लिये देखें– उत्पत्ति 2:15-25; नीति. 19:13; 21:9,19; 27:15,16; 31:30-31; 1 कुरि. 11:3; 13:1-8; कुलु. 3:18,19; 1 तीमु. 3:4-5; तीतु. 2:3-5; 1 पत. 3:1-7

विवाह में यौन

Sex in Marriage

परमेश्वर ने ही यौन की खोज की और उसने उत्पादन के साथ साथ आनन्द के लिए भी इसकी रचना की। तथापि, बाइबल स्पष्ट रूप में बताती है कि यौन संबन्धों

का आनन्द केवल उन्हें ही लेना है जिन्होंने स्वयं को एक जीवनपर्यन्त वाचा में एक साथ जोड़ा है।

विवाह के बन्धन से बाहर के यौन संबन्धों को व्यभिचार के रूप में देखा जाता है। प्रेरित पौलुस ने कहा कि इस तरह के कार्य करने वाले परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे (देखें 1 कुरि. 6:9-11)। एक मसीही इस तरह के कार्य में पड़ने पर अपनी आत्मा में दोष भावना का अनुभव करेगा, जो उसे पश्चात्ताप की ओर लेकर जाएगी, और उसे पश्चात्ताप करना चाहिए!

पौलुस पति और पत्नियों के यौन उत्तरदायित्वों के संबन्ध में भी कुछ विशिष्ट निर्देश देता है:

> परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो। पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को। तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले और फिर एक साथ रहो, ऐसा न हो, कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे (1 कुरि. 7:2-5)।

ये पद, स्पष्ट करते हैं कि यौन को पति या पत्नी की ओर से एक ''इनाम'' के रूप में नहीं देखना चाहिए, क्योंकि किसी को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं है।

इसके अतिरिक्त, यौन एक परमेश्वर प्रदत्त दान है, और तब तक यह अपवित्र या पापपूर्ण नहीं होता जब तक कि यह विवाह की सीमाओं में रहता है। पौलुस ने मसीही दम्पत्तियों को यौन संबन्धों में जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त, नीतिवचन की पुस्तक में हम मसीही पतियों के लिये इस सलाह को पाते हैं:

> तेरा सोता धन्य रहे; और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रह, प्रिय हरिणी व सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सर्वदा तुझे संतुष्ट रखें, और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे (नीति. 5:18-19)।[62]

यदि मसीही दम्पत्तियों को पारस्परिक संतुष्टि देने वाले यौन संबन्ध का आनन्द लेना है, तो पतियों और पत्नियों को यह समझना चाहिए कि पुरुषों और स्त्रियों के यौन स्वभाव में बड़ी भिन्नता पाई जाती है। तुलना करने पर, एक पुरुष का यौन स्वभाव अधिक शारीरिक होता है, जबकि एक स्त्री का यौन स्वभाव उसकी भावनाओं से

62. इस बात के अधिक प्रमाण के लिए कि परमेश्वर कपट रखनेवाला नहीं है, देखें श्रेष्ठगीत 7:1-9 और लैव्यव्यवस्था 18:1-23

जुड़ा होता है। पुरुष देखने से यौन रूप में प्रोत्साहित हो जाते हैं (देखें मत्ती 5:28), जबकि स्त्रियां संबन्धों और स्पर्श के द्वारा यौन रूप में प्रोत्साहित होती हैं (देखें 1कुरि. 7:1)। पुरुष उन स्त्रियों के प्रति यौन रूप में आकर्षित होते हैं जो उन्हें अच्छी लगती हैं; जबकि स्त्रियां उन पुरुषों के प्रति यौन रूप में आकर्षित होती हैं जो शारीरिक आकर्षण की तुलना में कई तरह से उनकी सराहना करते हैं। इसलिए बुद्धिमान स्त्रियां अपने पति को प्रसन्न रखने के लिए अच्छे दिखने का प्रयास करती हैं। सभी बुद्धिमान पति अपनी पत्नियों का अलिंगन करने और दया के कार्य दिखाने के द्वारा उन्हें प्रेम दिखा सकते हैं, यह अपेक्षा करने के बजाय कि दिन के अन्त में उनकी पत्नी एकदम से उनकी ओर ''फिर जाए।''

एक पुरुष में यौन इच्छा की मात्रा उसकी देह में शुक्राणु निर्माण के आधार पर बढ़ती है, जबकि एक स्त्री की यौन अभिलाषा उसके मासिक चक्र के आधार पर बढ़ती या घटती है। पुरुषों में यौन उत्तेजना के साथ साथ कुछ ही सैकेंड या मिनटों में यौन पराकष्ठा का अनुभव करने की क्षमता होती है। जबकि स्त्रियों को अधिक समय लगता है। यद्यपि वह सैकेण्ड में ही शारीरिक रूप से तैयार हो जाए, तथापि यह भी संभव है कि उसकी देह आधे घण्टे तक तैयार न हो। इसीलिए बुद्धिमान पति उसके शरीर के स्थानों को चूमते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उसका शरीर यौन संबन्ध बनाने को तैयार हो जाता है। यदि वह इस बारे में न जानता हो कि उसकी देह के वे कौन से स्थान हैं तो वह उससे पूछ सकता है। इसके अतिरिक्त, उसे यह जानना चाहिए कि यदि उसमें यौन पराकाष्ठा तक पहुंचने की क्षमता है तो उसकी पत्नी में उससे भी अधिक है। उसे यह देखना है कि जो वह चाहती है उसे वह प्राप्त हुआ है या नहीं

मसीही पतियों और पत्नियों के लिए एक दूसरे के साथ अपनी ज़रूरतों पर विचार-विमर्श करना अनिवार्य है और उसके साथ साथ अधिक से अधिक यह सीखने की भी कि वे भिन्न लिंग के बारे में कितना अधिक जान सकते हैं। महीनों और वर्षों के संप्रेषण, अभ्यास और खोज के द्वारा पति पत्नी के बीच यौन संबन्ध का परिणाम सर्वदा बढ़ने वाली आशीष के रूप में हो सकता है।

एक मसीही परिवार के बच्चे

Children of a Christian Family

बच्चों को अपने मसीही अभिभावकों के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होने व आज्ञाकारी होने की शिक्षा दी जानी चाहिए। और उनके ऐसा करने पर लंबी आयु के साथ साथ उनके लिए अन्य आशीषों की भी प्रतिज्ञा की गई है :

> हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। ''अपनी माता और पिता का आदर कर'' (यह

> पहली आज्ञा है, जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है), कि ''तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' (इफि. 6:1-3)।

मसीही पिताओं को, अपने परिवार के प्रमुख होने के कारण, अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने का प्राथमिक उत्तरदायित्व दिया गया है :

> हे बच्चेवालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की कृपा की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो (इफि. 6:4)।

ध्यान दें कि पिता का उत्तरदायित्व दो-गुना है; अपने बच्चों का प्रभु के *अनुशासन* और *निर्देश* में पालन-पोषण करना। आइये सबसे पहले बच्चों को अनुशासित करने की आवश्यकता पर विचार करें।

बाल अनुशासन
Child Discipline

वह बच्चा जिसे कभी अनुशासित नहीं किया गया है वह स्वार्थी और अधिकार के प्रति विद्रोही होकर बढ़ेगा। बच्चों द्वारा किसी भी नियम की अवज्ञा किये जाने पर उन्हें उसी समय अनुशासित किया जाना चाहिए। बच्चों को गलतियों या अनुत्तरदायित्वता के लिये दण्डित नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें अपनी गलतियों या अनुत्तरदायित्वता के परिणाम का सामना करने की ज़रूरत है, जो व्यस्क जीवन की वास्तविकताओं में तैयार करने में उन्हें सहायक होते हैं।

छोटे बच्चों को पिटाई करने के द्वारा दण्डित किया जाना चाहिए, जैसा परमेश्वर का वचन भी निर्देश देता है। बेशक, शिशुओं को नहीं मारना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि शिशुओं को उनकी मर्ज़ी पूरी करने दी जाए। स्पष्ट है, जन्म के पश्चात् से ही बच्चे पर यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वे माता-पिता के अधिकार क्षेत्र में हैं। उन्हें बहुत ही छोटी आयु में इस बारे में सिखाया जाना चाहिए कि शब्द ''नहीं'' का अर्थ क्या है, उन्हें उन चीज़ों से दूर करते हुए जिन्हें वे कर रहे हैं या फिर करने वाले हैं। एक बार ''नहीं'' शब्द के अर्थ को समझ लेने पर, उनकी कमर पर एक छोटी सी थपकी उस समय उनकी समझने में अच्छी सहायक होगी जब वे आज्ञा उल्लंघन करेंगे। ऐसा किया जाने पर बच्चे बहुत कम आयु में ही आज्ञाकारी रहना सीख जाएंगे।

माता-पिता अपने बच्चों के अनैच्छिक व्यवहार पर बल न देते हुए उन पर अपने अधिकार को स्थापित कर सकते हैं, जैसे हर समय जिस चीज़ की मांग वे करते हैं उन्हें देते हुए। ऐसा करना बच्चों को यह सिखाना है कि कुछ पाने के लिए उन्हें रोना है और हर समय बच्चों की मांग पूरी करने पर माता-पिता बच्चों के अनुचित

व्यवहार को बढ़ावा देते हैं। बुद्धिमान माता-पिता अपने बच्चों में उचित व्यवहार को बढ़ावा देते हैं।

ताड़ना या पिटाई शारीरिक रूप से नुकसान पहुंचाने वाली नहीं होनी चाहिए, बल्कि अनाज्ञाकारी बच्चों को इतनी पीड़ा देनेवाली होनी चाहिए कि वे कुछ समय के लिए रोएं। इस तरह से बच्चा, अनाज्ञाकारिता के साथ दर्द को जोड़ना सीखेगा। बाइबल इसकी पुष्टि करती है :

> जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम रखता है, यत्न से उसको शिक्षा देता है...लड़के के मन में मूढ़ता बन्धी रहती है, परन्तु छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उससे दूर की जाती है...लड़के की ताड़ना न छोड़ना क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। तू उसको छाड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा...छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का यों ही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है (नीति. 13:24; 22:15; 23:13-14; 29:15)।

जब माता-पिता केवल अपने नियमों के लिए ही दबाव डालते हैं तब उन्हें बच्चों को आज्ञाकारी बनाने के लिए धमकाने की ज़रूरत नहीं होती। यदि एक बच्चा आज्ञा उल्लंघन करता है तो उसकी पिटाई की जानी चाहिए। यदि एक अभिभावक अपने बच्चों को केवल *पीटने* की धमकी ही देता है तो वह अपने बच्चे को अनाज्ञाकारिता में बने रहने देता है। परिणामस्वरूप, बच्चा तब तक अपने माता-पिता की शाब्दिक डांट को आज्ञाकारी होने के लिए महत्व नहीं देता जब तक कि वह आवाज़ एक उच्च स्तर पर नहीं पहुंच जाती।

पिटाई किये जाने के पश्चात् बच्चे को गले से लगाकर अपने प्रेम से आश्वस्त किया जाना चाहिए।

एक बच्चे को शिक्षा देना

Train Up a Child

मसीही माता-पिता को यह जानना चाहिए कि उन पर अपने बच्चों को शिक्षा देने का उत्तरदायित्व है, जैसा हम नीतिवचन 22:6 में पढ़ते हैं "लड़के को *शिक्षा* उसी मार्ग की दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।" (पर बल दिया गया है)।

शिक्षा देने में अनाज्ञाकारिता के साथ न केवल दण्ड जुड़ा रहता है बल्कि अच्छे व्यवहार के लिए प्रतिफल भी। बच्चों के अच्छे व्यवहार व गुणों को बढ़ावा देने के लिए माता-पिता द्वारा उनकी प्रशंसा किये जाने की ज़रूरत है। बच्चों को यह

आश्वासन दिये जाने की ज़रूरत है कि उन्हें उनके माता-पिता द्वारा प्रेम-ग्रहण करने के साथ-साथ सराहा जाता है। माता-पिता अपने प्रेम का प्रगटीकरण आलिंगन करने, प्रशंसा करने और चुंबन करने के साथ साथ अपने बच्चों के साथ समय बिताने द्वारा कर सकते हैं।

''शिक्षा देने'' का अर्थ ''आज्ञाकारी बनाने'' से है। मसीही माता पिता को अपने बच्चों के सामने इसे एक विकल्प के रूप में नहीं रखना चाहिए कि वे कलीसिया (चर्च) में जाएं या नहीं या प्रतिदिन प्रार्थना करें या नहीं। बच्चे यह जानने में उपयुक्त नहीं हैं कि उनके लिये क्या उचित है क्या नहीं-इसी कारण परमेश्वर ने उन्हें माता-पिता दिये हैं। वे माता-पिता जो यह देखने में अपनी सारी शक्ति और ऊर्जा लगा देते हैं कि उनके बच्चों ने सही शिक्षा को प्राप्त किया है या नहीं, परमेश्वर उनसे प्रतिज्ञा करता है कि उनके बच्चे बूढ़े होने पर भी सही मार्ग से नहीं हटेंगे, जैसा हम नीतिवचन 22:6 में भी पढ़ते हैं।

बच्चों के बढ़ने पर उन्हें वृद्धिगत उत्तरदायित्व दिये जाने चाहिए। प्रभावी अभिभावकता का लक्ष्य बच्चों को पूर्ण व्यस्कता तक के लिये धीरे-धीरे उत्तरदायी बनाने का होता है। जैसे जैसे बच्चा बढ़ने लगता है उसे अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, एक किशोर को यह भी समझना चाहिए कि वह अपने द्वारा लिये गए निर्णय के परिणाम को ग्रहण भी करेगा और यह कि उसके माता-पिता हमेशा उसे संकट की अवस्था से ''बाहर निकालने'' को खड़े नहीं होंगे।

निर्देश दिये जाने के लिये माता-पिता का उत्तरदायित्व

Parents' Responsibility to Instruct

जैसा हम इफिसियों 6:4 में देखते हैं, पिता अपने बच्चों को अनुशासित करने के लिये ही उत्तरदायी नहीं हैं, बल्कि उनसे उन्हें प्रभु में *निर्देश* दिये जाने की भी अपेक्षा की गई है। बाइबल की नैतिकता, मसीही चरित्र या थियोलोजी के संबन्ध में एक बच्चे को निर्देश देने का उत्तरदायित्व कलीसिया का नहीं बल्कि एक पिता का है। वे माता-पिता जो अपने बच्चों को परमेश्वर के बारे में सिखाने का समस्त उत्तरदायित्व सण्डे स्कूल के शिक्षक पर छोड़ देते हैं वे एक गंभीर गलती को करते हैं। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल को आदेश दिया :

> और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनता हूं वे तेरे मन में बनी रहें; और *तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना,* और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना (व्यवस्था. 6:6-7, पर बल दिया गया है)।

मसीही अभिभावकों को अपने बच्चों को उनकी कम आयु में ही परमेश्वर का परिचय उन्हें यह बताते हुए देना चाहिए कि वह कौन है और वह उनसे कितना अधिक

प्रेम करता है। छोटे बच्चों को यीशु के जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की कहानी सुनाई जानी चाहिये। अधिकांश बच्चे पांच या छह वर्ष की आयु में सुसमाचार को समझ सकते हैं और वे प्रभु की सेवा करने का निर्णय भी ले सकते हैं। इसके एकदम बाद ही (छह या सात वर्ष की आयु तक, और कई बार बहुत ही छोटे होने पर), वे अन्य भाषाओं के बोलने के प्रमाण के साथ पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को प्राप्त कर सकते हैं। बेशक सभी बच्चों पर सख्त नियमों को नहीं डाला जा सकता क्योंकि प्रत्येक बच्चा भिन्न होता है। मुख्य बात यह है कि मसीही अभिभावकों को अपने बच्चों की आत्मिक शिक्षा को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बनानी चाहिए।

अपने बच्चों से प्रेम करने के दस नियम

Ten Rules for Loving Your Children

1) अपने बच्चों को चिढ़ाएं नहीं (देखें इफि. 6:41) बच्चों से व्यस्कों के समान कार्य करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि आप उनसे बहुत अधिक की आशा करें, तो वे आपको यह सोचकर प्रसन्न करना छोड़ देंगे कि ऐसा करना असंभव है।

2) अपने बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों के साथ न करें। उन्हें यह जानने दें कि आप परमेश्वर की ओर से उनमें पाई जाने वाली प्रतिभाओं और अद्वितीय योग्यताओं की कितनी अधिक सराहना करते हैं।

3) उन्हें अपने समस्त घराने का उत्तरदायित्व दें जिससे वे जानें कि वे भी पारिवारिक इकाई का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। उपलब्धियां एक सही आत्म-सम्मान के निर्माण का खण्ड होती है।

4) अपने बच्चों के साथ समय बिताएं। उन्हें जानने दें कि वे आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्हें भौतिक चीज़ें देना उन्हें स्वयं को देने का कोई विकल्प नहीं है। इसके अतिरिक्त, बच्चे उन से अधिक प्रभावित होते हैं जो उनके साथ सही समय बिताते हैं।

5) यदि आपको कुछ नकारात्मक कहना है तो इसे सकारात्मक तरीके से कहने का प्रयास करें। जब कभी बच्चे मेरी बात नहीं मानते तो मैं उनसे कभी यह नहीं कहता कि वे ''बुरे'' हैं। इसके विपरीत, मैं अपने पुत्र से कहता हूं, ''तुम एक अच्छे लड़के हो और अच्छे लड़के वह नहीं करते जो तुमने अभी किया।'' (इसके बाद मैं उसकी पिटाई करता हूं।)

6) उन्हें जानने दें कि ''नहीं'' शब्द का अर्थ है ''मुझे तुम्हारी चिन्ता है।'' जब बच्चे हमेशा अपनी मर्ज़ी के अनुसार कार्य करते हैं, तब वे जान जाते हैं कि आपको उनकी कोई चिन्ता नहीं है।

7) **अपने बच्चों से आपकी नकल करने की अपेक्षा करें।** बच्चे अपने मां-बाप के उदाहरण से सीखते हैं। बुद्धिमान अभिभावक अपने बच्चों से कभी इस तरह नहीं कहेगा, ''जैसा मैं कहता/कहती हूं वैसा करो न कि वैसा जैसा मैं करता/करती हूं।''

8) **अपने बच्चों को उनके सभी संकटों से न छुड़ाएं।** केवल ठोकर खाने वाले पत्थरों को ही हटाएं, कदम रखने वाले पत्थरों को हमेशा उनके मार्ग पर बने रहने दें।

9) **अपने पूरे मन से परमेश्वर की सेवा करें।** मैंने ध्यान दिया है कि गुनगुने स्वभाव के अभिभावकों के बच्चे बहुत कम ही व्यस्क होने पर प्रभु की सेवा के कार्य में लगे रहते हैं। उद्धार न पाए अभिभावकों के मसीही बच्चे और पूर्ण रूप से समर्पित नहीं होते मसीही अभिभावकों के बच्चे एक बार ''घोंसले में से बाहर निकलने'' के पश्चात् सामान्यता परमेश्वर की सेवा में बने रहते हैं।

10)**अपने बच्चों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा दें।** अभिभावक अक्सर अपने बच्चों की शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं लेकिन उन्हें सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा-बाइबल की शिक्षा, देने में असफल हो जाते हैं।

सेवकाई, विवाह और परिवार की प्राथमिकताएं

The Priorities of Ministry, Marriage and Family

संभवत: मसीही अगुवों द्वारा की जाने वाली सबसे सामान्य गलती अपनी सेवकाई के कारण अपने विवाहों और परिवारों की अनदेखी करना है। वे यह कहते हुए स्वयं को सही ठहराते हैं, उनका यह बलिदान ''परमेश्वर के कार्य के लिये'' है।

इस गलती का उपाय उस समय किया जाता है जब शिष्य-निर्माता सेवक यह जान जाता है कि उसकी *सच्ची* आज्ञाकारिता और परमेश्वर के प्रति समर्पण उसके जीवन और उसके बच्चों के साथ उसके संबन्धों को प्रभावित करता है। यदि प्रभु का एक सेवक अपनी पत्नी से वैसे प्रेम नहीं करता जैसे मसीह अपनी कलीसिया से करता है या यदि वह प्रभु में बच्चों का पालन पोषण करने को उनके साथ आवश्यक समय नहीं बिताता तो वह परमेश्वर के प्रति समर्पित होने का दावा नहीं कर सकता।

इसके अतिरिक्त, अपने जीवन साथी या बच्चों की उपेक्षा करना इस बात का चिन्ह है कि उनकी सेवकाई एक पार्थिव सेवकाई है जिसे अपनी शक्ति में होकर किया गया है। कठिन कार्य के बोझ को उठाने वाले अधिकांश संस्थागत पास्टर इसका उदाहरण हैं, वे स्वयं को सभी कलीसियाई कार्यक्रमों को क्रमानुसार चलाए रखने में थका हुआ पाते हैं।

यीशु ने प्रतिज्ञा की कि उसका बोझ हल्का और उसका जूआ सरल है (देखें मत्ती 11:30)। वह किसी भी सेवक को उसके परिवार की कीमत पर संसार या कलीसिया के प्रति अपने समर्पण को दिखाने के लिए नहीं बुलाता। वास्तव में, एक प्राचीन होने

की मांग है कि वह, ''अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो'' (1 तीमु. 3:4)। उसके परिवार के साथ उसका संबन्ध सेवकाई के लिए उसकी उपयुक्तता की एक जांच है।

जिन्हें यात्रा सेवकाई के लिए बुलाया गया है और जो कई अवसरों पर अपने परिवारों से दूर रहते हैं उन्हें उस समय में अपने परिवारों पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करते हुए समय बिताना चाहिए, जिस समय वे घर में होते हैं। मसीह की देह के सह-सदस्यों को इस तरह के प्रबन्ध को संभव करने के लिए अपनी शक्ति से जितना अधिक हो सके उसे करना चाहिए। शिष्य-निर्माता सेवक जानते हैं कि उनकी अपनी संतानें उनके प्राथमिक शिष्य हैं। यदि वे उस कार्य में असफल हो जाते हैं, तो उन्हें अपने घर से बाहर शिष्य बनाने की ज़रूरत नहीं है।